नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत-इंडोनेशिया संबंधों का स्वर्णिम दौर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इंडोनेशिया यात्रा केवल एक औपचारिक राजनयिक दौरा नहीं, बल्कि भारत की बदलती वैश्विक भूमिका का स्पष्ट संकेत है. इस यात्रा के दौरान रक्षा, व्यापार, तकनीक, शिक्षा, कृषि, संस्कृति और समुद्री सुरक्षा से जुड़े 20 महत्वपूर्ण समझौतों एवं पहलों पर सहमति बनी है. इन समझौतों ने भारत और इंडोनेशिया के संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी के नए स्तर पर पहुंचा दिया है. यह ऐसे समय में हुआ है, जब हिंद-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक शक्ति संतुलन का केंद्र बन चुका है और समुद्री सुरक्षा से लेकर आपूर्ति श्रृंखला तक हर क्षेत्र में नए समीकरण बन रहे हैं. इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष रक्षा सहयोग रहा.

ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल की आपूर्ति के लिए हुआ समझौता भारत के रक्षा निर्यात की बढ़ती क्षमता का प्रमाण है. फिलीपींस और वियतनाम के बाद इंडोनेशिया का भी इस मिसाइल को अपनाना दर्शाता है कि भारतीय रक्षा तकनीक पर दुनिया का भरोसा लगातार बढ़ रहा है. इसी प्रकार, इंडोनेशिया के सुपर -30 लड़ाकू विमानों के लिए अस्त्र मिसाइल का चयन भारत की स्वदेशी रक्षा तकनीक की स्वीकार्यता को नई पहचान देता है. यह केवल हथियारों का निर्यात नहीं, बल्कि भारत की सामरिक विश्वसनीयता का विस्तार भी है.समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में हुए समझौते भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य विश्व व्यापार की जीवनरेखा माने जाते हैं. सबंग बंदरगाह के विकास में सहयोग तथा गुरुग्राम स्थित सूचना समन्वय केंद्र में इंडोनेशिया के संपर्क अधिकारी की नियुक्ति से दोनों देशों के बीच समुद्री निगरानी, सूचना साझा करने और क्षेत्रीय सुरक्षा को नई मजबूती मिलेगी. यह सहयोग हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है.

आर्थिक क्षेत्र में हुए समझौते भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं. क्रिटिकल मिनरल्स, रेयर अर्थ एलिमेंट्स और स्टील की आपूर्ति श्रृंखला पर सहयोग से दोनों देश वैश्विक विनिर्माण और हरित प्रौद्योगिकी की दौड़ में अपनी स्थिति मजबूत कर सकेंगे. सेल और क्राकाटाउ स्टील का संयुक्त उद्यम औद्योगिक साझेदारी का नया मॉडल प्रस्तुत करता है. वहीं, भारत के यूपीआई को इंडोनेशिया की भुगतान प्रणाली से जोड़ने तथा ओएनडीसी की तर्ज पर इंडोनेशिया ओपन नेटवर्क की शुरुआत डिजिटल अर्थव्यवस्था में भारत के नेतृत्व को रेखांकित करती है. शिक्षा, कृषि और सांस्कृतिक सहयोग इस साझेदारी को और व्यापक बनाते हैं. आईआईएम बेंगलुरु का इंडोनेशिया में विदेशी परिसर स्थापित होना भारतीय शिक्षा की वैश्विक प्रतिष्ठा का प्रमाण है. गेहूं के उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की आपूर्ति और प्रमबनान मंदिर के संरक्षण में सहयोग दोनों देशों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊर्जा देंगे.

प्रधानमंत्री मोदी को इंडोनेशिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'बितांग आदिपूर्ण' से सम्मानित किया जाना भी दोनों देशों के बीच बढ़ते विश्वास और सम्मान का प्रतीक है. भारत और इंडोनेशिया केवल पड़ोसी समुद्री राष्ट्र नहीं, बल्कि साझा सभ्यतागत विरासत और समान रणनीतिक हितों वाले साझेदार हैं. आवश्यकता इस बात की है कि इन समझौतों को समयबद्ध ढंग से धरातल पर उतारा जाए. यदि ऐसा हुआ तो यह साझेदारी केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता, आर्थिक समृद्धि और भारत की वैश्विक भूमिका को भी नई दिशा देगी. वास्तव में, यह दोनों देशों के संबंधों में एक स्वर्णिम अध्याय की सार्थक शुरुआत है.

स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहन

श्रीपाद नाइक

> अब जबकि ब्रिक्स की भारत की अध्यक्षता आगे बढ़ रही है, सहयोग की एक ऐसी भविष्योनमुखी रूपरेखा को मजबूत करने का अवसर है जो सामर्थ्य, बड़े पैमाने पर काम करने की क्षमता, विश्वसनीयता, तकनीक की सुलभता, सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला और सतत विकास का समर्थन करे. चुनौती सिर्फ स्वच्छ ऊर्जा की क्षमता को बढ़ाने की ही नहीं, बल्कि ऐसी ऊर्जा प्रणाली के निर्माण की भी है जो सबके लिए सुलभ, किफायती एवं भरोसेमंद होने के साथ-साथ दीर्घकालिक आर्थिक विकास और मानव विकास को कायम रखने में सक्षम हों.

वैश्विक स्तर पर बढ़ती अनिश्चितता, ऊर्जा की बढ़ती मांग और जलवायु से जुड़ी गंभीर चुनौतियों के इस दौर में, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को ऐसी ऊर्जा प्रणालियों का निर्माण करने की जरूरत है जो स्वच्छ व अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित, सस्ती एवं भरोसेमंद होने के साथ-साथ विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की विकास संबंधी जरूरतों तथा आर्थिक आकांक्षाओं के अनुरूप भी हों.

स्वच्छ ऊर्जा दरअसल ऊर्जा सुरक्षा, औद्योगिक विकास और दीर्घकालिक विकास की दृष्टि से तेजी से अहम होती जा रही है. यह ईंधन बाजार में आने वाले उतार-चढ़ाव से पैदा होने वाले जोखिमों को कम कर सकती है, ऊर्जा को अपेक्षाकृत अधिक सुलभ बना सकती है, रोजगार सृजित कर सकती है, घरेलू उद्योगों को मजबूत कर सकती है और देश को अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ बना सकती है. फिर भी, स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में आगे बढ़ने के रास्ते एक जैसे नहीं हो सकते. इन रास्तों को राष्ट्रीय परिस्थितियों, उपलब्ध संसाधनों और विकास की प्राथमिकताओं के हिसाब से निर्धारित किया जाना चाहिए. इसी बिंदु पर विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के बीच आपसी सहयोग महत्वपूर्ण हो जाता है. ब्रिक्स के सदस्य देशों के बीच बेहतर सहयोग से स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने की प्रक्रिया में तेजी लाने के साथ-साथ ऊर्जा सुरक्षा, स्थिरता और समावेशी विकास के साझा लक्ष्यों को भी आगे बढ़ाया जा सकता है.

भारत का अपना अनुभव यह बताता है कि स्वच्छ ऊर्जा की शुरुआत लोगों से ही होनी चाहिए. पिछले दशक में, प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) के तहत लगभग 28.6 मिलियन घरों को बिजली के कनेक्शन दिए गए. इससे सभी तक बिजली पहुंचाने का काम आगे बढ़ा और ग्रामीण व कम सुविधावाले इलाकों में लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के तहत महिलाओं को 105 मिलियन से अधिक एलपीजी कनेक्शन दिए गए. इससे खाना पकाने के साफ-सुथरे तरीकों को बढ़ावा मिला, घर में सेहत बेहतर हुई और कठिन श्रम का बोझ कम हुआ. ये पहल एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को रेखांकित करती हैं- स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने को केवल स्थापित मेगावाट या जोड़ी गई क्षमता के आधार पर नहीं मापा जा सकता, बल्कि इससे पैदा हुए अवसरों, सुदृढ़ हुई आजीविका और बेहतर हुए जीवन स्तर के आधार पर भी मापा जाना चाहिए. लोगों को प्राथमिकता देने वाले इस दृष्टिकोण के साथ-साथ बड़े पैमाने पर काम और सहयोगी बुनियादी ढांचे की भी जरूरत है.

भारत की स्वच्छ ऊर्जा की कहानी में नवीकरणीय ऊर्जा अहम हो गई है. लेकिन इसकी सफलता इसे समर्थन प्रदान करने वाली प्रणालियों पर निर्भर करती है. सौर और पवन ऊर्जा को तेजी से अपनाया जा सकता है, लेकिन इनकी पूरी क्षमता का लाभ तभी मिल पाएगा जब पारेषण (ट्रांसमिशन), वितरण (डिस्ट्रीब्यूशन), भंडारण (स्टोरेज) और ग्रिड प्रबंधन एकसाथ मिलकर काम करें. भारत ने स्वच्छ ऊर्जा के विस्तार में सहायता प्रदान करने वाली प्रणालियों को मजबूत करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है. पारेषण संबंधी बुनियादी ढांचे (ट्रांसमिशन इंफ्रास्ट्रक्चर) का निरंतर विस्तार हुआ है. इसके साथ-साथ ऊर्जा के भंडारण (एनर्जी स्टोरेज) और ग्रिड की सुदृढ़ता (ग्रिड फ्लेक्सिबिलिटी) के क्षेत्र में भी निवेश बढ़ा है. वितरण (डिस्ट्रीब्यूशन) संबंधी सुधारों और उन्नत ग्रिड तकनीक को अपनाने से एक ऐसी बेहतर एवं भरोसेमंद ऊर्जा प्रणाली बनाने में मदद मिली है, जो नवीकरणीय ऊर्जा की बढ़ती हिस्सेदारी को समन्वित करने में सक्षम है.

भारत की गैर-जीवाश्म ईंधन पर आधारित क्षमता अब 288 गीगावॉट से अधिक हो गई है. बड़े पैमाने की परियोजनाओं के अलावा, वितरित नवीकरणीय ऊर्जा (डीआरई) प्रणालियां जैसे कि रूफटॉप सोलर, सोलर पंप, मिनी-ग्रिड और माइक्रो-ग्रिड ग्रामीण और कम सुविधावाले इलाकों में स्वच्छ ऊर्जा को और अधिक सुलभ बना रही हैं. ये प्रणालियां सिंचाई, कोल्ड स्टोरेज, स्कूलों, हेल्थकेयर सेंटरों तथा स्थानीय व्यवसायों को मदद पहुंचाने के साथ-साथ ग्रामीण आजीविका और स्थानीय आर्थिक सुदृढ़ता को भी बढ़ावा दे रही हैं. भारत की 'पीएम सूर्य घर- मुफ्त बिजली योजना' बड़े पैमाने पर इस दृष्टिकोण को दर्शाती है.

(लेखक विद्युत राज्यमंत्री हैं)

शिक्षकों पर गैरशिक्षकीय काम का भार

विधानमंडल सत्र में मंत्री आश्वासन देते हैं कि शिक्षकों को गैरशिक्षकीय काम नहीं सौंपा जाएगा लेकिन फिर स्कूल के समय के बाद यह काम करने का आदेश जारी किया जाता है. हाल ही हुए जनगणना के प्रथम चरण का काम शिक्षकों से लिया गया जिसमें अप्रैल-मई की भारी गर्मी में घर-घर जाकर शिक्षकों ने 33 प्रश्नों का फॉर्म भरा. अब उन्हें बीएलओ की जिम्मेदारी निभाते हुए 29 जुलाई तक मतदाताओं के घर-घर जाकर आवेदन वितरित करना और फिर जाकर भरे हुए आवेदन जमा करना होगा. उन्हें मतदाताओं की फोटो भी जमा करना होगा. यदि मतदाता से प्रतिसाद नहीं मिला या घर बंद पाया गया तो फिर से उन्हें वहां जाना पड़ेगा. यह सब न करने पर उनकी नौकरी पर आंच आएगी. ऐसी स्थिति में शिक्षक अध्यापन का काम कैसे कर पाएंगे? एक ओर तो उन्हें दूसरी, तीसरी व छठी का नए सिरे से तैयार किया गया पाठ्यक्रम पढ़ाना है और दूसरी ओर एसआईआर के लिए काम करना है. एसआईआर में एक आवेदन भरने में न्यूनतम 20 मिनट लगते हैं. इस तरह 1,000 आवेदन हर शिक्षक को भरवाने होंगे. नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार राज्य के 8,000 से अधिक एक शिक्षकवाली शालाओं में 1,50,000 से ज्यादा छात्र पढ़ाई करते हैं. जब यह शिक्षक बीएलओ का काम करेंगे तो विद्यार्थियों की पढ़ाई का क्या होगा? शिक्षक के कार्यों में पोषण आहार को रोज दर्ज करना, गणवेश का समन्वय, वृक्षारोपण करवाना, स्वाधीनता दिवस कार्यक्रम की तैयारी शामिल है. शिक्षकों के जनगणना व एसआईआर कार्यों में व्यस्त रहने से अध्यापन पर विपरीत असर पड़ेगा. सरकार अपने बहुत से काम आजकल बाहर से ठेके पर करवाती है. यदि वह जनगणना व एसआईआर का काम भी बाहरी एजेंसी को सौंप दे तो शिक्षकों का भार कम होगा तथा काम की तलाश में भटक रहे अनेक शिक्षित बेरोजगारों को काम मिलेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

उपचुनाव : इधर नरोत्तम का नाम फाइनल, कांग्रेस दावेदारों में उलझी

हरीश दुबे

दतिया उपचुनाव के लिए नामांकन दाखिली का सिलसिला शुरू हो चुका है. एक ओर भाजपा ने अपने कद्दावर नेता डॉ. नरोत्तम मिश्रा को लगातार पांचवी बार दतिया विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतारना करीब-करीब तय कर लिया है और उनके नाम की सिर्फ औपचारिक घोषणा होना बाकी है, टिकट की दौड़ में भाजपा में उनके अलावा और कोई बड़ा नाम भी नहीं उभरा है, वहीं कांग्रेस अभी तक शोभा भारती, घनश्याम सिंह और अवधेश नायक के नामों में ही उलझी हुई है.

निवर्तमान कांग्रेस विधायक राजेन्द्र भारती दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं. जब जीतू पटवारी और दिग्विजय सिंह जैसे बड़े नेता इस हफ्ते कार्यकर्ता सम्मेलन करने दतिया आए, तब भी वे दतिया तशरीफ नहीं लाए, उनसे फोन पर बात करने के बाद दिग्विजय ने ही खुलासा किया कि भारती का ऑपरेशन हुआ है और वे दिल्ली में ही इलाज करा रहे हैं. भारती अपनी धर्मपत्नी को टिकट दिलाना चाहते हैं ताकि सहानुभूति लहर का फायदा हासिल हो सके.

कांग्रेस में टिकट के दूसरे दावेदार बताए जा रहे स्थानीय राजपरिवार के कुंवर घनश्याम सिंह पहले ही अपनी परंपरागत सीट सेबढा छोड़कर दतिया आने के प्रति अनिच्छा जता चुके हैं. वर्षों पहले भाजपा छोड़कर कांग्रेस में आए अवधेश नायक जरूर पूरी दमदारी से टिकट मांग रहे हैं लेकिन साथ ही यह भी संकल्प जता रहे हैं कि पार्टी यदि उनके बजाए किसी अन्य को मौका देती है तो उसे जिताने के लिए जी जान से जुटेंगे. बहरहाल, आधिकारिक तौर पर अभी भाजपा ने अपने प्रत्याशी के नाम का ऐलान नहीं किया है लेकिन नरोत्तम ने अपनी उम्मीदवारी को सुनिश्चित मानते हुए जोरशोर के साथ चुनाव प्रचार शुरू कर दिया है. वे अत्यंत विनम्र भाव से जनता के दरबार में हाजिरी भरते हुए समर्थन मांग रहे हैं. पिछली हार को लेकर उनका जनता से कोई गिला शिकवा नहीं हैं. नरोत्तम उवाच... दतिया की जनता ने उन्हें लगातार तीन बार जिताकर अपना एमएलए बनाया है, एक बार हरा दिया, तो क्या? अपने प्रतिद्वंदी भारती परिवार के जनाधार को खारिज करते हुए दार्शनिक अंदाज में यह भी कह रहे हैं कि पिछली बार राजेंद्र भारती नहीं जीते थे बल्कि मैं हारा था!

मुरैना में बह रही उल्टी बयार

भाजपा इस वक्त प्रदेश और देश की सत्ता पर काबिज है, लिहाजा पिछले बारह साल से देश की सत्ता से बाहर चल रही कांग्रेस के नेताओं का भाजपा में पलायन अजूबा कही जाने वाली बात नहीं है लेकिन मुरैना में वाकई में अजूबा हो रहा है. यहां भाजपा से कांग्रेस में पलायन चल रहा है.

अभी कल ही भाजपा के पुराने नेता प्रेमकुमार बंसल कांग्रेस में चले गए, अकेले नहीं बल्कि सैकड़ों के दल बल के साथ. निकाय चुनाव सिर पर हैं और अपनी महापौर के भगवा हो जाने के बाद कांग्रेस यहां नए सिरे से जमावट में लगी है, दलित नेता प्रेमकुमार को भाजपा से कांग्रेस में लाए जाने को इसी से जोड़कर देखा जा रहा है. इस दलबदल के जलसे में विधायक समेत कांग्रेस का पूरा स्थानीय नेतृत्व मौजूद था. प्रेमकुमार को कांग्रेस से क्या भरोसा मिला है, ये तो वे ही जानें.

सिंधिया ले गए अदाणी की ढाई हजार करोड़ की फैक्ट्री का श्रेय

शिवपुरी में अदाणी ग्रुप की हथियार फैक्ट्री के प्रोजेक्ट का पूरा श्रेय सिंधिया ले गए हैं. हालांकि भूमिपूजन के जलसे में सीएम भी मौजूद थे लेकिन जैसा कि सीएम का अंदाज है, वे सूबे के विभिन्न इलाकों में आने वाली विकास योजनाओं का श्रेय खुद लेने के बजाए वहां के छत्रपों को तत्काल देने में कोताही नहीं बरतते. शिवपुरी में भी सीएम का यही अंदाज दिखा. हथियार फैक्ट्री के इतर सिंधिया ने सीएम के समक्ष जो भी मांगें रखीं, वे मंच से ही मंजूर कर ली गईं. बहरहाल शिवपुरी को हथियार फैक्ट्री मिलना इस अंचल के औद्योगिक विकास के लिहाज से बड़ा कदम माना जा रहा है. 2,500 करोड़ की लागत वाली अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस की इस फैक्ट्री में हाईटेक हथियार, गोला-बारूद, अत्याधुनिक लॉन्ग-रेंज मिसाइलें और मिशन-रेडी डिफेंस प्रोडक्ट्स का निर्माण किया जाएगा. जाहिर है कि इस प्रोजेक्ट से स्थानीय स्तर पर बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे और राज्य में रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा. इतिहास खंगालने पर पता चलता है कि महादजी सिंधिया के शासनकाल में मेजर सैंगस्टर की देखरेख में मथुरा, दिल्ली, ग्वालियर, कालपी और गोहद में ऑर्डनेंस फैक्ट्री और मैगजीन स्थापित किए गए थे. लगता है कि ज्योतिरादित्य भी अपने पुरखों की इसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं.

निशानेबाज

मंदिर में हुई चढ़ावे की चोरी हो-हल्ला करे वो हिंदू विरोधी

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, स्वामी गोविंद देव गिरी ने विपक्षी पार्टियों के नेताओं को निशाना बनाते हुए कहा कि राममंदिर में चढ़ावा चोरी को आधार बनाकर संपूर्ण राष्ट्र में जो हो-हल्ला मचाया गया है, उसका इरादा साफ नहीं है. रामभक्ति का विरोध करने वाले लोगों ने दिखावे के लिए असाधारण काम किया है. ये वही लोग हैं जिन्होंने कारसेवकों पर लाठियां चलवाई थीं. इनका मुख्य हेतु हिंदू समाज को ध्यान में रखना चाहिए.'

हमने कहा, 'चंपत राय को क्लीन चिट देने वाले स्वामी गोविंद देव गिरी पहले प्रवचनकार थे, तब उनका नाम किशोर व्यास था. वे कथावाचक से तरक्की कर धर्माचार्य बन गए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, नदी का उदगम और साधु का अतीत नहीं पूछा करते. गोविंद देव ने उन विपक्षी नेताओं को आड़े हाथ लिया है, जिनका मंदिर निर्माण में दूर-दूर तक कोई योगदान नहीं है और जो मंदिर के उद्घाटन समय वहां नहीं आए. जो लोग रामभक्त नहीं हैं, उन्हें राममंदिर की चंदा चोरी के बारे में पूछने और बवाल खड़ा करने का क्या अधिकार है?

उनका निशाना चढ़ावा चोरी उजागर करने वाले सपा प्रमुख व यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव की ओर है. उनका आशय है कि अखिलेश व राहुल गांधी हिंदू विरोधी हैं तभी तो चंदा चोरी को लेकर हल्ला-गुल्ला मचा रहे हैं. कोई अपनी थाली में खाए या उसमें छेद करे, इन लोगों को क्या मतलब! अच्छा-भला चंदा चोरी का धंधा चल रहा था, उसे ऐसे ही लगातार चलने देना था. इन्होंने रंग में भंग कर दिया. अब तो चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा भी ले लिया. इन आलोचकों के कलेजे में ठंडक पड़नी चाहिए. उन्हें शर्म आनी चाहिए कि व्यर्थ का हंगामा खड़ा कर दिया. यह पूरामामला झूठ का प्रपंच है.'

हमने कहा, 'देशवासी तो यही मानते हैं कि चुनाव जीतने, विपक्षी पार्टियों को तोड़ने, नेताओं का दलबदल कराने के महान मिशन के लिए करोड़ों रुपये लगते हैं. मंदिर के चढ़ावे की रकम, सोना-चांदी सभी इसी काम के लिए जा रहे थे. अयोध्या तो सिर्फ झांकी थी, काशी-मथुरा बाकी है. विपक्ष के नेताओं को समझना चाहिए था कि रामजी की चिड़िया, रामजी का खेत, खाओ चिड़िया भर-भर पेट ! घी कहां गया एनडीए की खिचड़ी में !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12313 - डॉ. सागर खादीवाला

तथा अंतर्दशा आदि दिए हों 2. जन्मदाता 3. मृत्यु के देवता 4. जंगल, घर (सं.) 5. घायल, जख्मी 7. लज्जित होना या करना 10. राजा की आज्ञा, आज्ञापत्र 11. रक्षा का वचन देना, शरण देना 13. आपका (पत्रों के अंत में) 15. ध्वनि गुंजार (सं.) 16. अवस्था 18. पपीहा नामक पक्षी 20. समाप्त

बाएं से दाएं

1. किसी की जय मनाने का शब्द 6. झुकने की क्रिया या भाव 7. शतरंज के खेल में कोई मुहरा ऐसी जगह रखना जहां से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो 8. आंख के ऊपर का पर्दा 9. घृणा 12. लक्ष्मी, पत्नी 14. भ्रम में डालना, बहकाना 16. वन (सं.) 17. यूनान देश का निवासी 19. विवाहित 20. पत्र 21. इनकार किया हुआ, जिसमें 'हां' का अभाव हो

ऊपर से नीचे

1. वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति-दशा

Solution 12312

पं	च	भु	ज		प	थि	क
च		ना	ग	री	क		मा
क	च	ना	र		वा	स	ना
न्या	य		म	स	न	द	
	न	वा	ग	त		न	मी
आ		ह	र	का	रा		न
शि	क	वा		र	क्ष	क	
क	ड़ा	ही		ना	स	म	झ

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र मेंअरूचि व व्यवधान होगा. अधिकारियों के कोप का सामना करना होगा. मान सम्मान के प्रति सचेत रहें. मित्रों से बैचारिक मतभेद रहेगा. वर्ष के मध्य में प्रियजनों के सहयोग से कार्यों में सफ्लता मिलेगी. शासन सत्ता का लाभ मिलेगा. नवीन योजनाओं में पूंजी निवेश होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को सत्ता का सुख रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में रूचि रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के कोप कासामना करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं में पूंजी निवेश होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को प्रियजनों का सहयोग सुख शांति रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक भावुक अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. कोमल शरीर वाला होगा, 5 वर्ष की आयु तक स्वास्थ्य में कुछ नरमीं रहेगी, कम बोलेगा पर जो भी बोलेगा वह अपनी बुद्धिमानी से परिपूर्ण रहेगी. 35 वर्ष की आयु के बाद अच्छी उन्नति करेगा. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण नवमीं गुरूवासरे प्रात: 5/35 तदुपरि दशमीं तिथौ रात 3/35, अश्विनी नक्षत्रे दिन 11/3, सुकर्मा योगे प्रात: 7/13 तदुपरि धृति योगे रातअंत 4.34, गर करणे सू.उ. 5/15, सू.अ. 6/45, चन्द्रचार मेष, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण नवमीं/दशमी को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई के भाव में तेजी होगी, गेहूं, जौ, चना, चांवल, जूट, पाट बारदान के भाव में मंदी होगी. गुड, शक्कर घी तेल कपास के भाव में नरमीं रहेगी. भाग्यांक 1521 है.

मेष- पुरानी मुश्किलें दूर हो सकती है, जरूरतमंदों की मदद करके खुशी होगी, साधनों की अनुकूलता रहेगी, लाभदायक अवसर मिलेंगे.

वृषभ- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, नये कामकाज की शुरूआत हो सकती है, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा.

मिथुन- जिद में आकर आप गलत फैसला ले सकते हैं, भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, शादी विवाह के कार्यों में खर्च होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा.

कर्क- तय कार्यक्रम में बदलाव से समस्या हो सकती है, बिखरे कार्यों का समेटने में मित्रों की मदद मिलेगी, कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है.

सिंह- कार्य को समय पर निपटाने की आदत डालें, सफ्लता मिलेगी, अधिकार में वृद्धि होगी, मान प्रतिष्ठा मिलेगी, अतिथि वृषभमन हो सकता है.

कन्या- स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, कामकाज के सिलसिले में यात्रा संभव है, किसी समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी.

तुला- नए संपर्क केरिअर बनाने में सहायक रहेंगे, व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बनी रहने से तनाव रहेगा, वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

वृश्चिक- निजी कार्यों को टालने से समस्या हो सकती है, संपत्ति संबंधी विवाद सुलझने के आसार हैं, जो भी मिल जाये उसी में संतोष रहेगा. यश प्राप्त होगा.

धनु- पारिवारिक मामलों में बाहरी दखल से समस्या बढ़ सकती है, मित्र व कुटुम्बियों के संबंध में मधुरता रहेगी, जोड़तोड़ के कामकाज सफ्ल होगा.

मकर- बुजुर्गों के व्यवहार से खिन्नता होगी, उच्च अध्ययन में बेहतर परिणाम मिलेंगे. कामकाज के प्रति लगन, निष्ठा की रूचि रहेगी. .

कुम्भ- संतान को भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, मेहनत का भरपूर लाभ होगा, आय व्यय समान रहेगा, पेट संबंधी विकार होगा, खानपान पर संयम रखें.

मिनमौजी रवैया तरक्की में बाधक हो सकता है, नई जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढ़ेगी, राजकीय कार्यों में समाधान होगा, मार्गलिक कार्य में खर्च होगा.

SUDOKU 7445

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7444

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7